**वैरागी का स्वगत परिचय**

* **प्रो० (डॉ०) रमाकान्त आङ्गिरस**

वैरागी हूं मैं वह

रामजी के चरणों में

जिसका है पूर्ण राग

परब्रह्म राम मेरे

रहते हैं यहीं कहीं

मेरे ही आस-पास

चितिशक्ति जनकजा का

जो हैं अक्षत सुहाग ।

मैनें तो रामकाज

करने का व्रत लेकर

जन्म लिया बार-बार

औरों को दुख दे कर

अपना सुख लेते जो

झेले मैंने उनके

अपने पर सब प्रहार

लोकजीवन में

विषमता को मिटाने के लिये

गुगनचुम्बी अंहकारों को

गिराने के लिए

राम जी ने कहा मुझ से

चिर उपेक्षित

अन्त्यजों के द्वार पर जाओ

मिलूंगा मैं वहीं तुमको

यूं प्रतीक्षा से न घबराओ

किन्तु जाने

काल के वश

बीच में ही

ऊंघने जैसे लगा मैं

शंख की ध्वनि ने

मुझे फिर से जगाया

सुप्तकुण्डल सर्पिणी ने

फन ऊठाया

गुरू रामानन्द ने

मुझको सहारा दे

जगाया

और दिया आदेश

“चलो वैरागी

उठो तुम

करने को रामकाज

चाहिए तुम को

अभी तो

राक्षसान्तक मरुतसुत

वज्रांग का आवेश

मैंने तुम्हें

शास्त्र दिया

अग्नि दहकाने को

शस्त्र दिया

क्रूरता मिटाने को

परदुखकातरता दी

मनुजता बचाने को ।

समय है अब

संत और सिपाही का

एक साथ रूप धरो

राम को समर्पित हो

वैरागी लक्ष्मण से

शुभ के लिए जूझ मरो ॥